बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

मासिक प्रतिवेदन

मई, 2023

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

(आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार)

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

विषय सूची

		पेज नं.
(A)	मुख्यमंत्री ने पटेल भवन में प्राधिकरण कार्यालय का किया उद्घाटन	03
(B)	प्राधिकरण के नए कार्यालय की कुछ झलकियां	04
(C)	वज्रपात से बचाव व रोकथाम के उपायों पर मंथन	05
(D)	दिव्यांग समायोजित आपदा जोखिम न्यूनीकरण प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न	07
(E)	हीट रिस्क वल्नरैबिलिटी (गर्मी जोखिम भेद्यता) आकलन पर बैठक	09
(F)	सामुदायिक स्वयंसेवकों को आपदा जोखिम एवं न्यूनीकरण का प्रशिक्षण	10
(G)	"सुरक्षित तैराकी" कार्यक्रम के अंतर्गत युवकों को मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण	11
(H)	बालक/बालिकाओं का समुदाय स्तर पर तैराकी व जीवन रक्षा कौशल प्रशिक्षण	12
(I)	एनसीसी शिविर में जागरूकता/संवेदीकरण एवं मॉकड्रिल	14
(J)	डूबने से होने वाली मृत्यु की रोकथाम हेतु जन–जागरूकता सप्ताह	15
(K)	मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम अन्तर्गत डायट के व्याख्याताओं का प्रशिक्षण	16
(L)	जीविका दीदियों का "आपदा प्रबंधन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	17
(M)	अनुभवी राजमिस्त्रियों का प्रशिक्षण	18
(N)	आईआईएससी, बेंगलुरु के विशेषज्ञों के साथ बैठक	19
(O)	एसडीएमएफ पर प्राधिकरण में प्रस्तुतिकरण	20
(P)	आईआईटी, पटना से एमओयू का प्रारूप तैयार	21
(Q)	सेहत ही असली धन है : डॉ. अमर	22
(R)	नुक्कड़ नाटक स्क्रिप्ट हेतु प्रतिष्ठित संस्थानों से संपर्क	23
(S)	अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम	24
(T)	मई माह की व्यय विवरणी	25
(U)	जन–जागरूकता के लिए मास मैसेजिंग	26

(A) मुख्यमंत्री ने पटेल भवन में प्राधिकरण कार्यालय का किया उद्घाटन

मुख्यमंत्री सह अध्यक्ष बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण श्री नीतीश कुमार ने 04 मई को नेहरू पथ स्थित सरदार पटेल भवन के पांचवें तल्ले पर बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण कार्यालय का शिलापट्ट अनावरण कर एवं फीता काटकर उद्घाटन किया। उद्घाटन के पश्चात् मुख्यमंत्री ने प्राधिकरण के नये कार्यालय का निरीक्षण भी किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न कमरों एवं अन्य भागों को देखा और वहां की गई व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी ली। इस अवसर पर मुख्यमंत्री का स्वागत प्रतीक चिह्न भेंटकर किया गया। मौके पर भवन निर्माण मंत्री श्री अशोक चौधरी, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री दीपक कुमार, मुख्य सचिव श्री आमिर सुबहानी, पुलिस महानिदेशक श्री आर0एस0 भट्टी, गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री चौतन्य प्रसाद, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य श्री पी0एन0 राय, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य श्री मनीष कुमार वर्मा, आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव श्री संजय कुमार अग्रवाल, मुख्यमंत्री के सचिव श्री अनुपम कुमार, भवन निर्माण विभाग के सचिव श्री कुमार रवि, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी श्री गोपाल सिंह, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सचिव श्री मीनेंद्र कुमार सहित अन्य वरीय पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

(B) प्राधिकरण के नए कार्यालय की कुछ झलकियां

(C) वज्रपात से बचाव व रोकथाम के उपायों पर मंथन

- **ग्रामीणों, खेतिहर मजदूरों, किसानों को किया जाएगा जागरूक, कृषि व आपदा प्रबंधन विभाग मिलकर करेंगे काम**
- **प्राधिकरण की ओर से प्रशिक्षित किए गए लोग प्रभावित क्षेत्र के ग्रामीणों से सीधा संवाद करेंगे**
- **प्राधिकरण के समस्त कर्मियों ने प्रभावित क्षेत्रों के स्थानीय जनप्रतिनिधियों, प्रशिक्षित राजमिस्त्रियों, सामुदायिक स्वयंसेवकों से लगातार संवाद–संपर्क बनाए रखा**

राज्य में वज्रपात की घटनाओं में जानमाल की हानि रोकने के ठोस उपायों पर विमर्श व त्वरित कार्रवाई हेतु बुधवार, 24 मई को बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण में एक उच्चस्तरीय बैठक हुई। बैठक में प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत ने बताया कि पिछले वर्षों से अब तक प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि राज्य में वज्रपात से मौत की अधिकतर घटनाएं दोपहर से लेकर शाम छह बजे तक हुई हैं। इस दौरान अधिक सावधानी की आवश्यकता महसूस की गई। उन्होंने प्राधिकरण की ओर से प्रशिक्षित किए गए सामुदायिक स्वयंसेवकों, पंचायत प्रतिनिधियों, राजमिस्त्रियों, जीविका दीदियों, एनसीसी कैडेट्स और कुशल तैराकों को फौरन प्रभावित क्षेत्र में मोर्चा संभालने का निर्देश दिया। ये सभी लोग उन क्षेत्रों में, जहां वज्रपात का पूर्वानुमान है, ग्रामीणों, खेतिहर मजदूरों/किसानों से सीधा संवाद स्थापित करेंगे। खेत में काम कर रहे किसानों को सतर्क करेंगे। उपाध्यक्ष ने कहा कि ग्रामीणों व किसानों को सलाह दी जाए कि अलर्ट घोषित होने के बाद कम से कम इन छह घंटों में खेत या खुले में न जाएं और अगर बाहर निकलना बेहद आवश्यक हो तो ठनका का अंदेशा होने पर सूखे पत्तों या ऐसी ही किसी चीज पर उंकडू बैठ कर अपना सर नीचे कर लें। तालाब, बड़े वृक्ष, बिजली के खंभों आदि के करीब बिल्कुल न जाएं। खराब मौसम में घर में रहें, सुरक्षित रहें।

आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल, कृषि विभाग के सचिव एन सरवन कुमार और कृषि निदेशक आलोक रंजन घोष दूरभाष के माध्यम से बैठक में जुड़े। किसानों को जागरूक करने की

इस मुहिम में प्रखंड व पंचायत स्तर पर नियुक्त कृषि सलाहकार व कृषि समन्वयक की सेवाएं लेने पर सहमति बनी। साथ ही उन जिलों में, जहां वज्रपात की चेतावनी जारी हुई है, वहां के जिलाधिकारी से आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव दूरभाष पर बात कर उन्हें उचित दिशानिर्देश देंगे। कोशिश यह रहेगी कि प्रत्येक ठनका संभावित क्षेत्र में जागरूकता वाहन के माध्यम से माईक एवं लाउडस्पीकर के द्वारा असल खतरे और उससे निपटने के तरीकों की सूचनाएं लगातार दी जाएं। बिहार मौसम सेवा केंद्र भी पूरी तत्परता और सक्रियता के साथ इस अभियान में शामिल होगा। सटीक समय पर पूर्वानुमान/चेतावनी जारी करेगा।

वज्रपात से बचाव व रोकथाम के लिए प्राधिकरण की ओर से किए जा रहे दीर्घकालिक उपायों की भी बैठक में समीक्षा की गई। पायलट प्रोजेक्ट के तहत राज्य के संवेदनशील नौ जिलों में चिन्हित स्थानों पर हूटर/सायरन के अधिष्ठापन की प्रगति की जानकारी साझा की गई। माननीय उपाध्यक्ष ने पटना, गया व औरंगाबाद जिलों की विभिन्न पंचायतों में स्थापित किए गए हूटर/सायरन की उपयोगिता व उसके प्रभाव के बारे में विस्तृत रिपोर्ट तलब की। उन्होंने जानना चाहा कि क्या वज्रपात की चेतावनी जारी होने के बाद हूटर समय पर बजाए जाते हैं? इसकी आवाज सुन खुले या खेतों में काम कर रहे लोग क्या सुरक्षित स्थानों पर पहुंचने का जतन करते हैं? प्राधिकरण की इस मुहिम को धरातल पर उतारने और इस पर नजर रखने के लिए विशेष कार्य पदाधिकारी श्री संदीप कुमार की अगुवाई में पांच सदस्यों की एक टीम बनाई गई है।

मई के आखिरी हफ्ते में मौसम की खराबी और विभिन्न क्षेत्रों में वज्रपात के पूर्वानुमान को देखते हुए प्राधिकरण के समस्त कर्मियों ने माननीय उपाध्यक्ष और माननीय सदस्यद्वय के निर्देशन में कमर कस ली। सभी पदाधिकारी–कर्मचारी व प्रोफेशनल्स प्रभावित जिलों में वहां के मुखिया, वार्ड प्रतिनिधि के अलावा प्रशिक्षित राजमिस्त्री, कुशल तैराक व सामुदायिक स्वयंसेवकों से लगातार संपर्क में रहे। व्यक्तिगत तौर पर अधिकाधिक लोगों से फोन से संपर्क किया गया। उनसे कहा गया कि वे ग्रामीणों से मिलें। उनसे संवाद करें, सभाएं करें, जागरूक करें कि मौसम खराब हो तो फिर खेत–खलिहान या खुले में ना जाएं। मीडिया विंग की ओर से भोजपुर जिले के जगदीशपुर, तरारी व सहार आदि प्रखंडों के निर्वाचित मुखिया से संपर्क कायम किया गया।

(D) दिव्यांग समायोजित आपदा जोखिम न्यूनीकरण प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

- **एआई का इस्तेमाल दिव्यांगजनों का जीवन सुरक्षित व बेहतर बनाने के लिए किया जाए : उपाध्यक्ष**

किसी भी आपदा में दिव्यांगजन सबसे ज्यादा असुरक्षित होते हैं। विभिन्न आपदाओं में दिव्यांगजनों को सुरक्षित रखने की दिशा में काम करने के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण कृतसंकल्प है। प्राधिकरण के तत्वावधान में पटना में चार दिवसीय दिव्यांग समायोजित आपदा जोखिम न्यूनीकरण प्रशिक्षण कार्यशाला 15 से 18 मई तक आयोजित किया गया। इसके तहत पहले चरण में पटना जिले में दिव्यांग प्रक्षेत्र में कार्यरत स्कूलों/स्वयंसेवी संस्थाओं के शिक्षकों–प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

स्वयंसेवी संस्था युगान्तर के कंकड़बाग, पटना स्थित सभाकक्ष में कार्यशाला का उद्घाटन 15 मई को प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत, प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी.एन. राय व विधान पार्षद डॉ. प्रमोद कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। डॉ. प्रमोद बिहार विधान परिषद की दिव्यांगजन कल्याण समिति के अध्यक्ष भी हैं। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ प्रमोद ने दिव्यांग बच्चों को आपदाओं में सुरक्षित रखने के प्राधिकरण के प्रयासों की सराहना की। साथ ही विधान पार्षद और विधान परिषद की दिव्यांगजन कल्याण समिति के अध्यक्ष के नाते प्राधिकरण की इस मुहिम में हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया।

उद्घाटन सत्र में प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत ने दिव्यांगजनों को आपदाओं में महफूज रखने के प्रयासों से जुड़े सभी लोगों का हृदयतल से आभार जताया। कहा कि मानवता का बहुत बड़ा कार्य ईश्वर ने आपको सौंपा है। दिव्यांगों के बीच काम करने के लिए

जज्बा होना चाहिए। सेवा की भावना, आस्था व विश्वास जरूरी है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय ने बताया कि आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में प्राधिकरण कैसे नवीनतम तकनीकों का सहारा ले रहा है। उन्होंने बताया कि दुनिया में कहीं कोई ऐसी टेक्नोलॉजी नहीं है, जो किसी दिव्यांग व्यक्ति को आपदा के बारे में पूर्व चेतावनी दे सके। देश के बड़े तकनीकी

संस्थानों की सहायता से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एक ऐसा उपकरण या मशीन बनवाने की कोशिश कर रहा है, जिससे दिव्यांग बच्चों को तुरंत सूचना मिल जाएगी कि वह किस तरह की आपदा में घिरा हुआ है तथा वहां से निकलने के लिए सबसे सुरक्षित मार्ग कौन–सा है?

यह बात भी सामने आई कि हमें दूसरों पर दिव्यांगजनों की निर्भरता खत्म करनी ही होगी। सम्मिलित प्रयासों के द्वारा हमें दिव्यांग बच्चों में यह जज्बा भरना होगा कि वे किसी भी सक्षम व्यक्ति से ज्यादा सक्षम हैं। आज के जमाने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का बोलबाला है। हमें इसका इस्तेमाल दिव्यांग बच्चों की बेहतरी के लिए, दिव्यांग बच्चों का जीवन और कैसे सुरक्षित व खुशहाल हो सके, इसके लिए करना होगा।

प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी एन राय ने अपने संबोधन में प्राधिकरण की दिव्यांग समायोजित आपदा जोखिम न्यूनीकरण योजना पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्राधिकरण ने विशेष बच्चों के शिक्षकों–प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की मदद से एक प्रशिक्षण हस्तपुस्तिका तैयार की है। इसके जरिये विशेष बच्चों को प्रशिक्षण/मॉकड्रिल के माध्यम से सशक्त बनाया जायेगा। वर्तमान में पायलट प्रोजेक्ट के तहत पटना जिले को चिह्नित कर यहां के दिव्यांगजनों से संबंधित स्कूलों व संस्थानों में इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को संचालित किया जा रहा है।

कार्यशाला में दिव्यांग प्रक्षेत्र में कार्यरत विभिन्न स्कूलों और स्वयंसेवी संस्थानों के 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया। राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के अलावा राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), बिहार अग्निशमन सेवाएं, यूनिसेफ और प्राधिकरण के विशेषज्ञों ने विभिन्न सत्रों में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया और आपदाओं में सुरक्षित रहने के गुर बताए। मॉक ड्रिल के माध्यम से इन्हें बताया गया कि विभिन्न आपदाओं की स्थिति में कैसे खुद सुरक्षित रहना है और दिव्यांग बच्चों को भी सुरक्षित रखना है। इससे मिले अनुभव के आधार पर इस कार्यक्रम का आयोजन पूरे राज्य के अन्य दिव्यांगजनों से संबंधित स्कूलों/संस्थानों एवं सभी प्रखंडों में होगा।

कार्यशाला के अंतिम दिन समापन सत्र में प्राधिकरण के सचिव श्री मीनेंद्र कुमार (भा.प्र.से.) ने अपने विचार रखते हुए प्रतिभागियों का मनोबल बढ़ाया। राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के सेकेंड इन कमांड श्री जितेंद्र पांडेय ने भी समापन सत्र को संबोधित किया। इस मौके पर यूनिसेफ के 'वाश' ऑफिसर श्री राजीव कुमार, युगांतर के श्री संजय पांडेय व श्री अमर कुमार भी मौजूद रहे। समारोह के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया। प्राधिकरण के इस महत्वाकांक्षी अभियान के संयोजक बनाए गए श्री संदीप कमल की निगरानी में उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

(E) हीट रिस्क वल्नरैबिलिटी (गर्मी जोखिम भेद्यता) आकलन पर बैठक

दिनांक 30–05–2023 को पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन संभाग की ओर से हीट रिस्क वल्नरैबिलिटी (गर्मी जोखिम भेद्यता) आकलन पर प्राधिकरण कार्यालय में बैठक का आयोजन किया गया। पूर्वाह्न 11.00 बजे माननीय उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में और माननीय सदस्यों के मार्गदर्शन में इराडे (IRADe-Integrated Research and Action for Development) द्वारा गर्मी जोखिम भेद्यता आकलन के प्रस्ताव पर यह बैठक आयोजित की गई। इस दौरान संभाग की ओर से एक पीपीटी प्रेजेंटेशन किया गया, वहीं इराडे ने ऑनलाइन मोड में अपने प्रस्ताव पर विस्तृत प्रस्तुति दी।

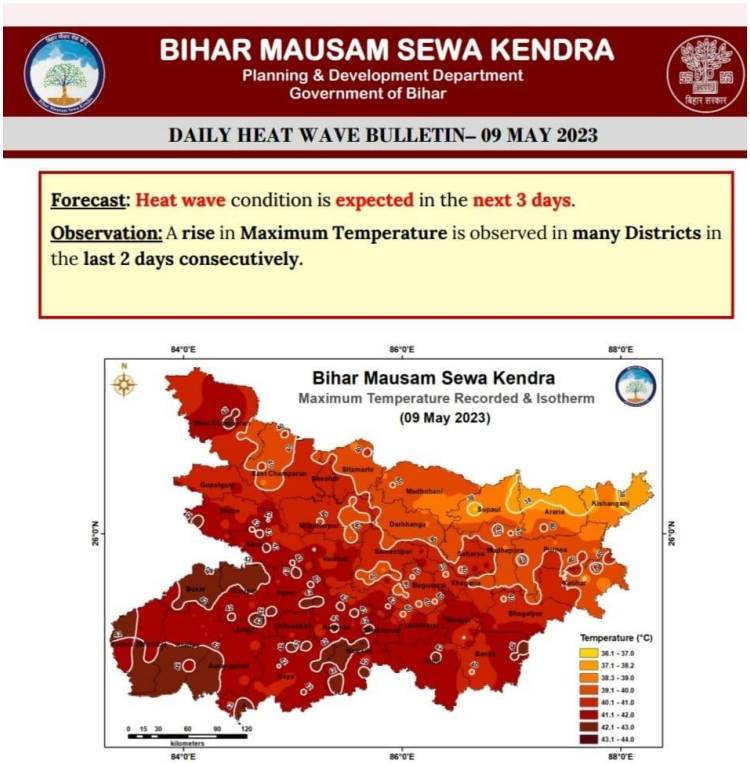

राज्य आपदा न्यूनीकरण निधि की प्रस्तुति

दिनांक 25 मई, 2023 को माननीय उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में और माननीय सदस्य के मार्गदर्शन में राज्य आपदा न्यूनीकरण निधि (एसडीएमएफ) कोष के लिए विभिन्न विभागों द्वारा गर्मी को कम करने पर केंद्रित परियोजनाओं पर एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग तथा शहरी विकास एवं आवास विभाग ने भाग लिया। अत्यधिक गर्मी व लू की वजह से जान–माल की क्षति के जोखिम को कम करने की परियोजनाओं (हीट मिटिगेशन प्रोजेक्ट्स) पर विशेष ध्यान देने के साथ एसडीएमएफ की विभिन्न विशेषताओं पर संभाग की ओर से एक प्रस्तुति दी गई।

राजधानी में प्रदूषण के खतरे पर विभिन्न विभागों के साथ बैठक

माननीय उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में और माननीय सदस्यों के मार्गदर्शन में 29 मई, 2023 को दोपहर 12.00 बजे पटना की प्रदूषण स्थिति और अपेक्षित भविष्य की प्रवृत्ति पर नेशनल एन्वॉयरन्मेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (नीरी) रिपोर्ट पर एक प्रस्तुति आयोजित की गई। बैठक में बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पटना नगर निगम और शहरी विकास एवं आवास विभाग ने भाग लिया। संभाग की ओर से पटना अर्बन एग्लोमरेट (PUA) में प्रदूषण की स्थिति पर नीरी रिपोर्ट पर पीपीटी प्रस्तुति दी गई थी। माननीय वीसी और अन्य माननीय सदस्यों ने विभागों–बोर्ड–निगम से नियोजन, पोस्ट कार्यान्वयन निगरानी और प्रभावी शमन उपायों के दौरान विभिन्न कार्यों के लिए जोरदार अपील की।

(F) सामुदायिक स्वयंसेवकों को आपदा जोखिम एवं न्यूनीकरण का प्रशिक्षण

हमारा बिहार बहु–आपदा प्रवण राज्य है। फलतः हमारे गांव, पंचायतों, प्रखंड एवं जिलों में विभिन्न तरह की आपदाएं आती रहती हैं। पंचायतों में कुछ नौजवान आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन हेतु जरूरी ज्ञान और हुनर सीख लें, तो वे अपने गांव, पंचायत, प्रखंड एवं जिले को आपदाओं से सुरक्षित रख सकते हैं। इस उद्देश्य हेतु प्रशिक्षण के माध्यम से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य के नौजवानों/नवयुवतियों को प्रशिक्षित कर आपदाओ के प्रत्युत्तर हेतु तैयार कर रहा है। विभिन्न आपदाओं की स्थिति में सुरक्षा प्रदान करने में ये युवा अपने समुदाय के मददगार साबित हो सकें, इस कार्यक्रम का उद्देश्य यही है। गांव, पंचायत, प्रखंड एवं जिला स्तर पर विभिन्न आपदाओं की प्रवणता की जानकारी हासिल कर उन आपदाओं के जोखिम–न्यूनीकरण तथा प्रबंधन में समुदाय की सहायता करने हेतु स्वयं को तैयार करने में युवा पूरे जोश के साथ भाग लेते हैं। इसी क्रम में **मई** माह में दिनांक 15–05–2023 **से** 26–05–2023 तक जिला मधेपुरा, सहरसा, किशनगंज, समस्तीपुर, सिवान, मधुबनी, मुंगेर, शिवहर एवं लखीसराय के स्वयंसेवकों का ओ.पी. साह सामुदायिक भवन, मालसलामी, पटना में 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित किया गया। इस तरह अब तक कुल 3621 स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

(G) "सुरक्षित तैराकी" कार्यक्रम के अंतर्गत युवकों को मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण

मई, 2019 में प्राधिकरण के बैनर तले डूबने से होने वाली मौतों की रोकथाम के उद्देश्य से ''सुरक्षित तैराकी'' कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। इसके अंतर्गत विभिन्न जिलों के चिह्नित अंचलों के गांवों के चयनित युवक/युवतियों को निर्धारित अर्हताओं के अनुसार मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण मॉड्यूल के अनुसार प्रशिक्षुओं को रिसोर्स पर्सन सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम की पृष्ठभूमि, महत्व एवं उद्देश्य के बारे में बताते हैं। तैराकी प्रशिक्षण, डूबते को बचाने हेतु सहायता एवं बचाव के तरीके, प्राथमिक उपचार की विधि आदि विषयों पर नौ दिवसीय सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

"सुरक्षित तैराकी" कार्यक्रम के अंतर्गत 16वें बैच में दिनांक 03.05.2023 से दिनांक 11.05.2023 तक नवादा जिले के कुल 23 प्रशिक्षुओं एवं 17वें बैच में दिनांक 16.05.2023 से दिनांक 24.05.2023 तक अररिया जिले के कुल 20 प्रशिक्षुओं को सफलतापूर्वक मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। विवरण निम्नांकित है :

बैच सं0	तिथि	जिला	प्रखण्ड	स्थान	कुल मास्टर ट्रेनर्स
16वां	03.05.2023 से 11.05.2023 तक	नवादा	काशीचक, हिसुआ, कौआकोल, अकबरपुर एवं वारिसलीगंज	NINI, PATNA	22
17वां	16.05.2023 से 24.05.2023 तक	अररिया	अररिया, जोकीहाट, नरपतगंजएवं भारगामा	NINI, PATNA	20
कुल योग					42

इस प्रकार मई, 2023 तक कुल 17बैच में पटना, वैशाली, खगड़िया, बेगूसराय, भोजपुर, गया, बांका, गोपालगंज, कटिहार, सारण, पूर्णिया, भागलपुर, औरंगाबाद, पूर्वी चंपारण, सुपौल, नवादा एवं अररिया जिलों के कुल **348+42=390** युवकों एवं 9 + 15 =24 युवतियों को मास्टर ट्रेनर्स तथा कुल 25 युवतियों एवं 09 +1 = 10 युवकों को तैराकी में प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है।

(H)बालक/बालिकाओं का समुदाय स्तर पर तैराकी व जीवन रक्षा कौशल प्रशिक्षण

राज्य में डूबने से होने वाली मौतों की रोकथाम एवं उनमें कमी लाने के उद्देश्य से सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम के अंतर्गत जिला प्रशासन पूर्णिया एवं पटना की ओर से चिन्हित प्रशिक्षण स्थलों पर 06 से 18 आयु वर्ग के बालकों का प्रशिक्षण अप्रैल–मई माह, 2023 में पुनः संचालित किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का क्रियान्वयन संबंधित जिला प्रशासन द्वारा NINI, पटना में प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स के सहयोग से किया जाता है। उक्त कार्यक्रम के अंतर्गत बालकों को 12 दिवसीय तैराकी एवं जीवन रक्षा कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह प्रशिक्षण उल्लिखित जिलों के चिन्हित घाटों पर बनाए गए अस्थायी तरणताल में प्रदान किया जाता है। मई माह 2023 में समुदाय स्तर पर सम्पन्न हुए प्रशिक्षण का विवरण निम्नलिखित है :–

क्र0 सं0	जिला	प्रखण्ड/साइट	प्रशिक्षण की तिथि (अप्रैल–मई, 2023)	बैच संख्या	प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों की संख्या
01	पूर्णिया	तालबाड़ी, (बायसी, सिरसी,), रंगपुरा उत्तर, (धमदाहा), बेलगच्छी, (अमौर)	24.04.2023 से 05.05 .2023	04	120
02	पटना	शेरपुर, मनेर	06.05.2023से 17.05.2023 19.05.2023से 30.05.2023	02	53

03	गोपालगंज	विदेशी टोला पोखरा में पीपराही पुल के पास दहा नदी में **(थावे)**	25-05-2023 से 05-06-2023 25-05-2023 से05-06-2023	02	**60**
04	भोजपुर	शाहपुर प्रखण्ड	27.04.2023 से08. 05 .2023, 15.05.2023 से26. 05 .2023 (02 बैच एक साइटपर अलग–अलग समय पर)	03	**90**
05	बेगूसराय	बलिया	19.04.2023 से29 . 04 .202301 .05 .2023 से12 . 05 .2023	02	**60**
		साहेबपुर कमाल	20.04.2023 से01 . 05 .2023 02 .05 .2023 से13 . 05 .2023	02	**60**
		मटिहानी	17. 04 .2023 से28 .04 .2023 29. 04 .2023 से 09.04.2023 10 . 05 .2023, से22 .04 .2023	03	**72**
06	वैशाली	महनार (नगर निगम बाजार घाट एवं हसनपुर चेतनाथ घाट)	29. 04 .2023 से 10.05.2023 11. 05 .2023 से 22 .05.2023	04	**100**
07		खगड़िया (प्रत्येक साइट पर कुल 02 बैच) कुल साइट की संख्या –03 (परबत्ता–02] गोगरी –01)	12 . 05 .2023 से 23.05.2023	06	**180**
08	बांका	ओढ़नी डैम कुल साइट की संख्या – 01	21. 04 .2023 से 02 .05.2023 04.05.2023 से 15.05.2023 17.05.2023 से 28.05.2023	03	**90**
			कुल		**885**

कुल 8 जिलों के विभिन्न प्रखंडों में चिह्नित साइट्स पर कुल 885 बालकों को तैराकी एवं जीवन रक्षा कौशल का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रकार अभी तक कुल 1467+885=2355 बालक/बालिकाओं को तैराकी एवं जीवन रक्षा कौशल का प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है।

(I) एनसीसी के शिविरों में सड़क सुरक्षा उपाय, प्राथमिक उपचार एवं अन्य प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं के बारे में जागरूकता/संवेदीकरण एवं मॉकड्रिल

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की ओर से राज्य के विभिन्न जिलों में आयोजित होनेवाले नेशनल कैडेट कोर (एनसीसी) के शिविरों के दौरान युवा कैडेटों को एनसीसी उड़ान एवं राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के सहयोग से सड़क सुरक्षा के उपायों व प्राथमिक उपचार की जानकारी दी जाती है। साथ ही प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं के बारे में जागरूकता/संवेदीकरण किया जाता है एवं मॉकड्रिल संपन्न करवाया जाता है। इनके बीच हस्त पुस्तिकाओं/ प्रचार–प्रसार सामग्रियों का वितरण भी किया जाता है। जनवरी, 2023 तक कुल 46 कैम्स में 20,700 एनसीसी कैडेट्स ने उल्लिखित कार्यक्रम में भाग लिया था।

मई माह 2023 में निम्नलिखित शिविरों में आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कैडेट्स के बीच संचालित किया गया :–

क्र0 सं0	दिनांक	शिविर स्थल	प्रतिभागियों की संख्या
01	27 .05 .2023	ओ०टी०सी०,बरौनी	410
02	28 .05 .2023	एन०सी०सी ग्रुप मुख्यालय, पटना	350
03	29 .05 .2023	डी० ए ० वी ० स्कूल, गया	410
04	31.05.2023	पैरडाइस चिल्ड्रेन अकादेमी, गया	350
कुल			**1520**

इस प्रकार अभी तक उल्लिखित कार्यक्रम में कुल 50 कैम्स में 22,220 एनसीसी कैडेट्स ने उक्त प्रशिक्षण में हिस्सा लिया है।

(J) डूबने से होने वाली मृत्यु की रोकथाम हेतु जन–जागरूकता सप्ताह

बिहार राज्य में डूबने से होने वाले मृत्यु की रोकथाम, जोखिम न्यूनीकरण एवं पूर्व तैयारी हेतु प्राधिकरण द्वारा **"जन–जागरूकता सप्ताह (23–29 मई, 2023**) आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों से निम्नलिखित गतिविधियों को आयोजित करने का अनुरोध किया गया :

1. डूबने की जहां अधिक घटनाएं होती हैं, ऐसे प्रखण्डों/पंचायतों को चिह्नित करके प्राधिकरण स्तर से बनायी गयी **"डूबने से होने वाली मौतों की रोकथाम, जोखिम न्यूनीकरण एवं पूर्व तैयारी हेतु कार्ययोजना"** का क्रियान्वयन हो।
2. प्राधिकरण स्तर से चलाए जा रहे **"सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम"** के अंतर्गत जिन जिलों में प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स हैं, उनका उपयोग जन–जागरूकता एवं प्रचार–प्रसार में किया जाए। प्रावधानों के अनुसार वित्तीय सहायता प्राधिकरण दे सकता है।
3. जिन जिलों में प्राधिकरण स्तर से Community Volunteers का प्रशिक्षण कराया गया है, उन जिलों में इनका उपयोग डूबने से बचाव के बारे में जागरूकता एवं प्रचार–प्रसार के लिए किया जा सकता है।
4. सभी पंचायत प्रतिनिधियों से अपील की जाए कि जिन इलाकों में बालू//मिट्टी के खनन या अन्य कारण से गड्ढ़े बन गए हैं, उन्हें चिह्नित करके वहां लाल झंडे का खतरे का संकेतक लगाया जाए। ऐसे खतरनाक स्थलों पर चल रहे खनन को अविलंब रोका जाए।
5. जलाशयों के किनारे मनाए जाने वाले पारंपरिक त्योहारों के दौरान खतरों की पहचान एवं अधिक सतर्कता रखने हेतु समुदाय के बीच चौपाल के माध्यम से जन–जागरूकता किया जाए।
6. बच्चे जो घर से बाहर स्नान के लिए या पशु चराने जाते हैं, उन्हें उनके अभिभावकों के माध्यम से खतरनाक जल स्रोतों से दूर रहने हेतु बार–बार सचेत करने के बारे में विद्यालयों, आंगनबाड़ी केन्द्रों, मंदिरों, मस्जिदों आदि से प्रचार–प्रसार किया जाए।
7. संवेदनशील क्षेत्रों में चेतना रथचलाए जाएं।
8. छोटे वाहनों से माइकिंग कराई जाए तथा हैण्ड बिल का वितरण कराया जाए ।
9. स्कूलों/कालेजों में निबंध की प्रतियोगिता करायी जाए। विषय हो "डूबने से होने वाली मौतों का जिम्मेवार कौन।"
10. प्राधिकरण स्तर से डूबने से होने वाले मृत्यु की रोकथाम हेतु Advisory कोभी राज्य के प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित करवाया गया।

(K)मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम अंतर्गत डायट के व्याख्याताओं का प्रशिक्षण

मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम (सुरक्षित शनिवार) के अंतर्गत राज्य के सभी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) के व्याख्याताओं में आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन की समझ विकसित करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षित शिक्षकों के माध्यम से जिलों में शैक्षिक प्रशिक्षण का आयोजन एवं सभी कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम (सुरक्षित शनिवार) का संचालन किया जाएगा।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के तत्वावधान में एवं राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, शिक्षा विभाग के सौजन्य से डायट के व्याख्याताओं का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम अप्रैल, 2023 से आरंभ किया गया। माह मई, 2023 में दिनांक 29 से 30 मई एवं 31 मई से 01 जून, 2023 की अवधि में राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 156 व्याख्याताओं ने भाग लिया।

(L) जीविका दीदियों का "आपदा प्रबंधन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

मानसिक स्वास्थ्य एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान, कोईलवर, भोजपुर में जीविका दीदियों द्वारा संचालित 'दीदी की रसोई' एवं 'दीदी का सिलाई घर' में कार्यरत सभी जीविका दीदियों को आपदा जोखिम न्यूनीकरण पर एक दिन का प्रशिक्षण दिया गया। इसमें प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं से बचाव के बारे में जानकारी दी गई। वज्रपात की पूर्व चेतावनी हेतु सभी दीदियों के मोबाइल में इंद्रवज्र एप डाउनलोड करवाया गया ताकि चेतावनी मिलने पर वे वज्रपात से सुरक्षित रहने के लिए आवश्यक उपाय कर सकें। खुद को सुरक्षित रख सकें और समुदाय की सुरक्षा में योगदान कर सकें। अगलगी से बचाव पर मॉकड्रिल के माध्यम से इन्हें जागरूक किया गया। साथ ही इन जीविका दीदियों को कार्यस्थल पर होनेवाली दुर्घटनाओं से बचाव के बारे में भी बताया गया। इसके साथ ही प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स के माध्यम से सभी जिलों में जीविका दीदियों को लू, अगलगी एवं वज्रपात से बचाव के बारे में प्रशिक्षण देकर जागरूक किया गया।

(M) अनुभवी राजमिस्त्रियों का प्रशिक्षण

विभिन्न आपदाओं की दृष्टि से बिहार राज्य देश के सर्वाधिक आपदा प्रवण राज्यों में से एक है। राज्य के सभी जिले भूकम्प के सर्वाधिक संवेदनशील जोन (पांच, चार, तीन) के अन्तर्गत आते है। उल्लेखनीय है कि अभी तक भूकम्प पूर्वानुमान की कोई सटीक सूचना प्रणाली विकसित नहीं हुई है। भूकम्प को रोका नहीं जा सकता किन्तु इससे निपटने की पूर्व तैयारी एवं जन–जागरूकता से इसके कारण होने वाली जान एवं माल की क्षति को काफी हद तक रोका जा सकता है। यह भी सच है कि भूकम्प से किसी की जान नहीं जाती, किन्तु भूकम्प के कारण ढहने वाले कमजोर भवनों में दबकर जन हानि होती है। अतएव भवनों को भूकम्परोधी बनाकर काफी हद तक हम जान–माल की क्षति को कम कर सकते हैं। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने आवासीय भवनों समेत अन्य संरचनाओं को भूकंप के दौरान होनेवाले नुकसान को कम करने के उद्देश्य से राज्य भर में असैनिक अभियंताओं व अनुभवी राजमिस्त्रियों को बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण देने के लक्ष्य रखा है। इसके अंतर्गत प्रथम चरण में लगभग 5000 अभियंताओं, वास्तुविदों एवं संवेदकों तथा करीब 20000 अनुभवी राजमिस्त्रियों को भूकम्परोधी निर्माण तकनीक का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

आपदा प्रबंधन के बदले परिदृश्य में भूकंपरोधी भवनों के निर्माण को बढ़ावा देने एवं पूर्व में निर्मित मकानों की रेट्रोफिटिंग कर उन्हें भूकंपरोधी बनाने की दिशा में प्राधिकरण कार्य कर रहा है। इसके लिए आवश्यक है कि निर्माण कार्य में संलग्न सभी साझेदारों का क्षमतावर्द्धन किया जाए तथा आमजन को भूकंपरोधी भवनों के निर्माण के संदर्भ में जागरूक किया जाए। अनुभवी राजमिस्त्रियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम को और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से देश के लब्ध प्रतिष्ठित संस्थान पटना स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) से समन्वय का कार्य किया जा रहा है। आईआईटी, पटना द्वारा प्रशिक्षण से संबंधित प्रस्ताव प्राधिकरण को भेजा गया है। यह अभी विचाराधीन है।

आरवीएस गाइडलाइन तैयार

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और आईआईटी, पटना के बीच संपन्न करार के तहत रैपिड विजुअल स्क्रीनिंग (आरवीएस) गाइडलाइन तैयार कर ली गई है। आईआईटी पटना द्वारा आरवीएस गाइडलाइन का अन्तिम प्रारूप तैयार कर प्राधिकरण को समर्पित किया गया है। इस मार्गदर्शिका के जरिये पुराने मकान को बिना तोड़ फोड़ किए, उसे आंखों से देख कर और छूकर यह पता लगाया जा सकेगा कि यह मकान भूकंप को बर्दाश्त कर पाएगा या नहीं। आमजन को भूकंपरोधी भवनों के निर्माण के लिए जागरूक करने की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम है। उक्त मार्गदर्शिका पुनरीक्षण व संपुष्टि (वेट्टिंग) हेतु विशेषज्ञों को भेजी जानी है। इस हेतु अग्रेतर कार्यवाही की जा रही है

बी एस टी एन (बिहार सिस्मिक टेलीमेट्री नेटवर्क)

बिहार सिस्मिक टेलीमेट्री नेटवर्क (बीएसटीएन) की स्थापना से संबंधित उपकरणों की प्राप्ति हेतु बिहार मौसम सेवा केंद्र द्वारा तैयार किये गए आरएफपी (प्रस्ताव के लिए अनुरोध) को पुनरीक्षण व संपुष्टि (वेट्टिंग) हेतु विशेषज्ञों को भेजा गया था। उनसे प्राप्त सुझाव के शामिल करते हुए संशोधित आरएफपी बिहार मौसम सेवा केंद्र से प्राप्त हुआ जिसे अग्रेतर कार्यवाही हेतु सचिव को पृष्ठांकित किया गया। इधर, राज्य के विभिन्न जिलों में नवनिर्मित बीएसटीएन फील्ड स्टेशन में जल रिसाव की सूचना मिली थी। इस आलोक में प्राधिकरण की दो सदस्यीय टीम ने छपरा, गोपालगंज, दरभंगा, मुजफ्फरपुर निरीक्षण के दौरान पाया था कि जल रिसाव की समस्या को ठीक कर लिया गया है। अन्य स्टेशनों की पूर्णता के सम्बन्ध में प्रतिवेदन भवन निर्माण निगम द्वारा अपेक्षित है।

(N) आईआईएससी, बेंगलुरु के विशेषज्ञों के साथ बैठक

बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोकने के उद्देश्य से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (आईआईएससी), बेंगलुरु के साथ एक समझौते पर दस्तखत किया है। इसके तहत आईआईएससी बिहार के लिए बाढ़ पूर्वानुमान प्रणाली विकसित करने का काम करेगी। इसे लेकर आईआईएससी, बेंगलुरु के विशेषज्ञों के साथ एक बैठक हुई। इस बैठक में एफएमआईएससी के प्रतिनिधि भी शामिल रहे।

सीडीएमपी के अनुमोदन की प्रक्रिया जारी

बिहारशरीफ एवं गया शहरी क्षेत्र की नगरीय आपदा प्रबंधन योजना प्राधिकरण स्तर पर अनुमोदित की जा चुकी है। पटना, मुंगेर, भागलपुर, बेगूसराय, आरा शहर की नगरीय आपदा प्रबंधन योजना अनुमोदन की प्रक्रिया में है। मुंगेर नगर आपदा प्रबंधन योजना (सीडीएमपी) को अंतिम रूप देने के लिए नगर निगम, मुंगेर के पदाधिकारियों तथा नॉलेज लिंक्स एजेंसी के साथ लगातार समन्वय किया जा रहा है। सारी आपदाओं के रिस्पांस प्लान कों अलग–अलग पृथक चैप्टर में डाला गया है। नॉलेज लिंक्स के प्रस्तुतिकरण को मूलरूप से उपयुक्त पाया गया। भाषाई अशुद्धियां सुधारने का निर्देश दिया गया। भाषाई व अन्य अपेक्षित सुधार के उपरांत फाइनल प्रिंटआउट हेतु स्पीड पोस्ट से सीडीएमपी नॉलेज लिंक्स के भेजा गया है।

भूकंप सुरक्षा क्लिनिक सह परामर्श केंद्र

राजकीय पॉलिटेक्निक, दरभंगा में निर्माणाधीन भूकंप सुरक्षा के लिए क्लिनिक सह परामर्श केंद्र के निर्माण का कार्य लगभग पूर्ण हो गया है। प्राचार्य को पूर्णता प्रतिवेदन प्राधिकरण को भेजने का अनुरोध किया गया।

(O) एसडीएमएफ पर प्राधिकरण में प्रस्तुतिकरण

दिनांक 27 अप्रैल, 2023 को विज्ञान भवन, दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में माननीय उपाध्यक्ष के निदेशानुसार प्राधिकरण की ओर से डॉ. बी. के. सहाय तथा दिलीप कुमार ने भाग लिया। यह कार्यशाला भारत में एसडीएमए/डीडीएमए का सुदृढ़ीकरण और क्षमता निर्माण (Strengthening and Capacity Building of SDMA /DDMA in India) विषय पर आयोजित की गयी थी। श्री पी. के. मिश्रा, माननीय प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव ने समेकित तौर पर कार्यक्रम को सराहा तथा कार्यशाला में लिए गए निर्णयों पर आगे सभी राज्यों को कार्य करने हेतु निदेशित किया। उक्त प्रशिक्षण के सन्दर्भ में एक प्रस्तुतिकरण तैयार करने हेतु माननीय उपाध्यक्ष द्वारा निदेशित किया गया। तत्पश्चात एसडीएमएफ पर प्राधिकरण के सभागार में प्रस्तुतिकरण दिया गया। इसे सभी प्रोफेशनल्स के साथ साझा भी किया गया ताकि एसडीएमएफ सम्बन्धी प्रोजेक्ट गाइडलाइन्स तथा प्रोजेक्ट निर्माण की बारीकी सभी समझ सकें।

विश्वविद्यालयों में आपदा प्रबंधन की पढ़ाई

राज्य के विश्वविद्यालयों में आपदा प्रबंधन की पढ़ाई शुरू करने के मुद्दे पर कुलपतियों व शिक्षाविदों की राज्यस्तरीय कार्यशाला में एक कोआर्डिनेशन समिति का गठन किया गया जिसकी दो बैठकें प्राधिकरण के तत्वावधान में आयोजित की गई हैं। बिहार की जरूरतों को ध्यान में रख मॉडल पाठ्यक्रम में आवश्यक बदलाव किए जाएंगे। इस पाठ्यक्रम को लागू करने में प्राधिकरण विश्वविद्यालयों को हर सहयोग करने को तैयार है। शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षकों, अधिकारियों को प्राधिकरण प्रशिक्षित करेगा। सभी विश्वविद्यालयों को पत्र भेज कर कम से कम दो संकाय सदस्यों को आपदा प्रबंधन सम्बन्धी प्रशिक्षण हेतु नामित करने का अनुरोध किया गया है। अभी तक 10 विश्वविद्यालयों से नामांकन प्राप्त हो चुका है और अन्य से भी नामांकन शीघ्र प्राप्त होने की संभावना है। प्रशिक्षण कार्य शीघ्र पूरा करने हेतु त्वरित कार्रवाई की जा रही है ताकि विभिन्न विश्वविद्यालयों में जल्द से जल्द आपदा प्रबंधन की पढाई शुरू की जा सके।

एनआईटी के साथ प्रोजेक्ट वर्क

राज्य में स्थित ऐतिहासिक महत्व के स्थलों और पुरातात्विक धरोहरों को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), पटना के साथ संयुक्त रूप से कार्यक्रम करने हेतु प्रोजेक्ट वर्क के लिए सैद्धांतिक स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है और एनआईटी, पटना को प्रोजेक्ट वर्क शुरू करने हेतु सूचित कर दिया गया है। एनआईटी ने प्रस्ताव के अनुसार एक रिसर्च टीम का गठन किया है और कार्य शुरू करने हेतु 50 प्रतिशत राशि की मांग की है। प्रोजेक्ट शुरू करने हेतु 10 प्रतिशत राशि ही अग्रिम निर्गत की जा सकती है, एनआईटी को इस तथ्य से अवगत करा दिया गया है। एनआईटी को एक सहमति पत्र (एमओयू) के द्वारा भुगतान की सभी शर्तें बताने हेतु पेपर डॉक्यूमेंट तैयार करने को कहा गया है।

(P) आईआईटी, पटना से एमओयू का प्रारूप तैयार

लब्ध प्रतिष्ठित तकनीकी शिक्षण संस्थान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), पटना के परियोजना प्रस्ताव – बिहार में प्राकृतिक आपदा प्रबंधन के लिए नवीनतम आईओटी और कृत्रिम बुद्धिमता आधारित तकनीकों को अपनाने की सुविधा (Facilitating adoption of IOT&Edge and AI based technologies for natural disaster management in Bihar) – के वित्तीय प्रावधानों में आवश्यक बदलाव हेतु पुनरावलोकन का अनुरोध किया गया। तदुपरांत आईआईटी ने एक संशोधित प्रस्ताव भेजा है। उक्त प्रस्ताव पर आईआईटी, पटना की टीम ने प्राधिकरण के समक्ष एक प्रस्तुतिकरण माननीय उपाध्यक्ष महोदय की अध्यक्षता में दिया। आईआईटी, पटना की तरफ से इस सन्दर्भ में सहमति पत्र (एमओयू) का एक प्रारूप तैयार कर स्वीकृति हेतु दिया गया है, जो प्राधिकरण में विचाराधीन है।

दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, गया में चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रतिकूल मौसम की चरम स्थितियों में आपदा जोखिम न्यूनीकरण के उपायों (Disater Risk Reduction Measure for Extreme Weather Events) पर बृहत परिचर्चा के लिए दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएसबी), गया में चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ 31 मई को हुआ। आपदा प्रबंधन केंद्रित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एनआईडीएम), दिल्ली और बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) की साझीदारी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने किया। इसमें जेएनयू और सहित कई अन्य विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

Four-day training programme on Disaster risk reduction begins at CUSB

OUR CORRESPONDENT

PATNA: A four-day comprehensive training programme on disaster risk reduction measures for extreme weather events kicked off at Central University of South Bihar (CUSB). The University Public Relation Officer (PRO) Md. Mudassir Alam said that the disaster focussed training programme is organised by CUSB in partnership with the National Institute of Disaster Management (NIDM), MHA, Government of India and the Bihar State Disaster Management Authority (BSDMA). The event was inaugurated by CUSB VC Prof. Kameshwar Nath Singh as the chief patron in presence of chief guest Rajendra Ratnoo (Executive Director of NIDM, IAS), Prof. Pradhan Parth Sarthi (Dean, SEEBS, CUSB), Dr. Garima Aggarwal (Senior Consultant, RID, NIDM), Prof. Kaushal Kumar Sharma (Dean, School of Social Science, Jawaharlal Nehru University), Prof. Balarm Pani (Dean of Colleges, University of Delhi), Dr. Manjit Singh (Dept. of Geography, Faculty Convenor, CUSB) and other dignitaries and experts from various fields.

In the introductory speech Prof. Pradhan Parth Sarthi said the training programme is a part of the ongoing efforts to strengthen disaster management practices and build resilience in the face of growing climate-related risks. Dr. Garima Aggarwal said universities are key resource for any government or organisation for spreading information, awareness and knowledge.

Rajendra Ratnoo said this event will be the catalyst and shed light on knowledge and wisdom for Disaster Risk Reduction in Bihar and other parts of the country. He said nowadays people are suffering from boiling water syndrome which should not be there. Prof. Kaushal Kumar Sharma emphasised that we have ample amount of knowledge but we need to derive the useful knowledge. Prof. Balarm Pani said that the main aim of this training program is to reduce the impact of any disaster.

(Q) सेहत ही असली धन है : डॉ. अमर

- **'इनसे मिलिए' कार्यक्रम में जाने–माने सुजोक थेरेपिस्ट ने वैकल्पिक चिकित्सा पर डाला प्रकाश**

सरदार पटेल भवन स्थित बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सभाकक्ष में 19 मई को आयोजित 'इनसे मिलिए' कार्यक्रम में जाने–माने सुजोक थेरेपिस्ट एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. अमर कुमार ने बताया कि चुंबक, अनाज के बीजों और सुई आदि की मदद से आप पुरानी से पुरानी गंभीर बीमारियों से छुटकारा पा सकते हैं। आपको कोई दवा नहीं लेनी पड़ती। सबसे बड़ी बात इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं। डॉ कुमार सुजोक थेरेपी के विशेषज्ञ हैं। कमर दर्द, जोड़ों का दर्द, घुटने का दर्द, पैरालिसिस, पार्किंसन, एसिडिटी और एक्जिमा जैसी गंभीर बीमारियों के इलाज में इन्हें विशेषज्ञता हासिल है।

डॉ. अमर कुमार ने बताया कि सुजोक पद्धति हमारे पंचतत्व पर ही आधारित है। इसके द्वारा एक्यूपंक्चर, लेजर, सुई, बीज व चुंबक आदि से हाथ और पैर में दबाव देकर गंभीर बीमारियों का इलाज किया जाता है। बगैर किसी दवा के सुजोक पद्धति से इलाज में मरीज को फौरन राहत मिलती है और सबसे बड़ी बात यह है कि इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं होता। प्रजेंटेशन के माध्यम से अपनी बात रखने के बाद डॉ. अमर ने प्राधिकरण कर्मियों के सवालों के जवाब भी दिए। कई लोगों का वही फौरी उपचार भी किया। इस मौके पर डॉ अमर की धर्मपत्नी अनामिका कुमारी भी मौजूद थीं, जो खुद भी जानी–मानी सुजोक थेरेपिस्ट हैं। इस अवसर पर प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत, माननीय सदस्य श्री पीएन राय, सचिव श्री मीनेंद्र कुमार समेत समस्त प्राधिकरण कर्मी मौजूद थे। प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी एन राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सभागार में उपस्थित सभी लोगों ने करतल ध्वनि से उनके सारगर्भित और ज्ञानवर्द्धक वार्ता के लिए डॉ. अमर का आभार व्यक्त किया।

कौन हैं डॉ. अमर कुमार

वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति सुजोक थेरेपी में डॉ अमर कुमार ने डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की है। वर्ष 2017 से आप लगातार पटना में प्रैक्टिस कर रहे हैं। चिकित्सा सेवा में आने से पूर्व आपने मार्केटिंग में भी बखूबी अपने हाथ आजमाए हैं। आप मार्केटिंग में एमबीए हैं और टाटा समूह की कई बड़ी कंपनियों में ऊंचे ओहदे पर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर के एनजीओ बीबीसी मीडिया एक्शन में भी आपने काम किया है।

क्या है सुजोक थेरेपी

सुजोक थेरेपी एक प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है जिसे विभिन्न प्रकार के दबाव बिंदुओं का उपयोग करके किया जाता है। इस थेरेपी में व्यक्ति के हाथ और पैर के छोटे–छोटे बिंदुओं को उपयोग में लाकर रोगों के इलाज का प्रयास किया जाता है। इनमें प्रमुख रूप से सुजोक एक्यूप्रेशर, सुजोक एक्यूपंक्चर, रंगों के साथ थेरेपी, अनाज के बीजों, चुंबक और स्माइल थेरेपी के जरिये इलाज किया जाता है। इसके जनक कोरिया के प्रोफेसर पार्क जे वू ने गहन अध्ययन के बाद इस बात की पुष्टि की कि मानव का पूरे शरीर की संरचना का लेखा–जोखा उसके पैरों और हथेलियों में है।

(R) नुक्कड़ नाटक स्क्रिप्ट हेतु प्रतिष्ठित संस्थानों से संपर्क

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के तत्वावधान में राज्य में आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं रोकथाम हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन एवं क्रियान्वयन किया जा रहा है। आपदाओं में सुरक्षित रहने के उद्देश्य से जन जागरूकता के लिए व्यापक प्रचार–प्रसार का सहारा लिया जाता है। नुक्कड़ नाटक इसका एक सशक्त माध्यम है। आपदाओं से बचाव के लिए पूर्व से मंचित किए जा रहे नुक्कड़ नाटकों में नयापन और रोचकता लाने के साथ–साथ इन्हें और सूचनाप्रद बनाने के उद्देश्य से लेखकों, नाट्यकर्मियों सगित कला व रंगमंच क्षेत्र की प्रतिष्ठित संस्थाओं से नई स्क्रिप्ट के लिए मीडिया विंग की ओर से संपर्क स्थापित किया गया।

इस सिलसिले में पुणे स्थित फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई), दिल्ली स्थित श्रीराम सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स व नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा और पटना स्थित पटना वीमेंस कॉलेज के संबंधित विभागों और प्रतिनिधियों से दूरभास पर बातचीत की गई। एफटीआईआई, पुणे और पटना वीमेंस कॉलेज की ओर से इसमें रूचि दिखाई गई। इस बाबत ई–मेल मांगी गई, जो दोनों संस्थानों को प्रत्युत्तर की आशा में भेज दी गई है।

(S) अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम

अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम' के तहत '16 बिंदु अग्नि प्रवणता सूचकांक' के आधार पर मई माह में राज्य के कुल 362 अस्पतालों का निरीक्षण किया गया जिसमें 39 सरकारी एवं 323 निजी अस्पताल शामिल हैं। इस प्रकार राज्य के अब तक कुल 9159 अस्पतालों का अग्नि प्रवणता सूचकांक के आधार पर निरीक्षण किया जा चुका है। इन अस्पतालों का निरीक्षण प्राधिकरण के दिशा निर्देश में अग्निशाम सेवाएं के अधिकारियों द्वारा किया गया, जिसका विवरण निम्नवत है:–

माह मई 2023 में हॉस्पिटल / नर्सिंग होम के फायर ऑडिट का आकड़ा ।								
क्र.सं.	जिला	कोविड अस्पताल			नॉन कोविड हॉस्पिटल			कुल अस्पताल
		सरकारी	निजी	कुल	सरकारी	निजी	कुल	
1	अररिया	0	0	0	1	1	2	2
2	अरवल	0	0	0	0	2	2	2
3	औरंगाबाद	0	0	0	0	4	4	4
4	कटिहार	0	0	0	3	7	10	10
5	किशनगंज	0	0	0	1	4	5	5
6	कैमूर	5	1	6	0	1	1	7
7	खगड़िया		0	0	0	7	7	7
8	गया	0	0	0	5	21	26	26
9	गोपालगंज	0	0	0	0	4	4	4
10	जमुई	0	0	0	1	1	2	2
11	जहानाबाद	1	0	1	0	2	2	3
12	दरभंगा	0	0	0	0	6	6	6
13	नवादा	0	0	0	0	15	15	15
14	नालंदा	0	0	0	0	9	9	9
15	पटना	0	0	0	1	53	54	54
16	पश्चिमी चम्पारण	0	0	0	0	8	8	8
17	पूर्णिया	0	0	0	0	8	8	8
18	पूर्वी चम्पारण	0	1	1	0	19	19	20
19	बक्सर	1	1	2	0	3	3	5
20	बाँका	0	0	0	0	6	6	6
21	बेगूसराय	1	0	1	0	12	12	13
22	भागलपुर	0	0	0	0	18	18	18
23	भोजपुर	0	0	0	0	6	6	6
24	मधुबनी	0	0	0	0	8	8	8
25	मधेपुरा	0	0	0	7	0	7	7
26	मुंगेर	0	0	0	1	5	6	6
27	मुजफ्फरपुर	0	1	1	1	26	27	28
28	रोहतास	2	0	2	4	5	9	11
29	लखीसराय	0	0	0	0	0	0	0
30	वैशाली	0	0	0	0	14	14	14
31	शिवहर	0	0	0	0	0	0	0
32	शेखपुरा	0	0	0	0	0	0	0
33	समस्तीपुर	0	0	0	3	18	21	21
34	सहरसा	0	1	1	0	2	2	3
35	सारन	0	0	0	0	5	5	5
36	सीतामढ़ी	0	0	0	0	8	8	8
37	सीवान	0	0	0	1	7	8	8
38	सुपौल	0	0	0	0	3	3	3
कुल		**10**	**5**	**15**	**29**	**318**	**347**	**362**

(T) मई माह की व्यय विवरणी

Expenditure report – May'23		
1	Commercial & Special Services	13,70,251
2	Office Expenditure	4,80,262
3	Petrol/ Diesel	47,025
4	Safe Swim	13,68,720
5	Heat Action Plan	2,652
6	Flood/ Draught	49,272
7	CDMP	8,490
8	MSSP	3,570
9	Publication & Printing	10,36,000
10	Jiweeka Didi Training	2,28,720
11	Task Force at Community Level	1,02,480
12	Medical	10,000
13	Telephone	11,855
14	Bihar Diwas 2023	66,46,198
15	University	73,500
16	" Upscaling of AapadaMita"	1,62,64,531
17	Mitigation Fund	1,47,76,143
18	DDMP	18,00,300
19	31-04	20,33,557

(U) जन–जागरूकता के लिए मास मैसेजिंग

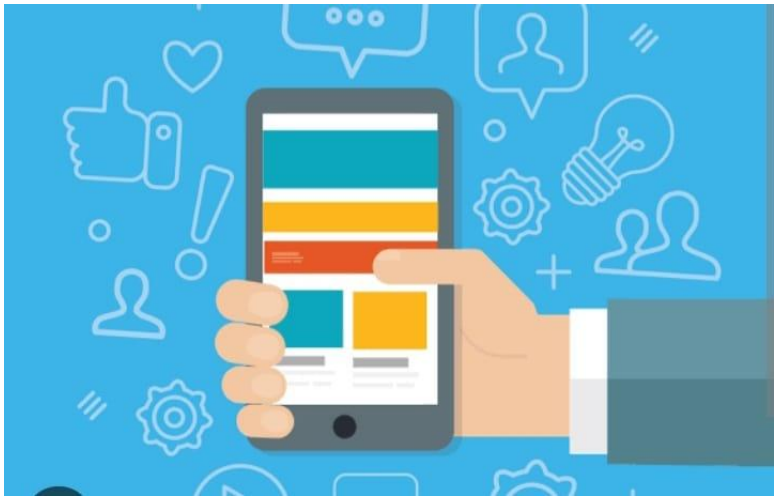

बिहार एक बहुआपदा प्रवण राज्य है, जहां लगभग सभी तरह की प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाएं घटित होती रहती हैं। यह राज्य जहां एक ओर लगभग हर वर्ष बाढ़ के प्रकोप को झेलता है, वहीं दूसरी ओर सुखाड़, अग्निकांड, शीतलहर, लू, वज्रपात आदि आपदाओं से राज्य का एक बड़ा भू–भाग प्रभावित होता है। भूकंप की दृष्टि से भी बिहार अत्यन्त संवेदनशील राज्य है। प्राकृतिक आपदाओं को हम पूरी तरह रोक तो नहीं सकते, परंतु बेहतर आपदा प्रबंधन एवं इसके सुदृढ़ीकरण से नुकसान को कम कर सकते हैं। इसके लिए आमलोगों को आपदा के खतरों से अवगत कराना जरूरी है। इसे ध्यान में रख प्राधिकरण की ओर से विभिन्न आपदाओं की स्थिति में 'क्या करें, क्या न करें' की जानकारी एसएमएस के माध्यम से लोगों को दी जाती है।

प्राधिकरण में जिला पदाधिकारी (38), एडीएम (38), बीडीओ (534), सीओ (534), प्रशिक्षित फोकल टीचर (1542), नाव एवं नाव मालिक (3820), पंचायत जनप्रतिनिधि (चयनित–207429, गैर चयनित–435699), जीविका दीदी– (148890), आशा कार्यकर्ता (77542) व आगनबाड़ी सेविका (45946) के नंबर उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त प्राधिकरण द्वारा प्रशिक्षित अभियंताओं एवं राजमिस्त्रियों के नंबर भी मौजूद हैं। इस तरह लगभग 36 लाख नंबर पर सामूहिक संदेश संप्रेषण (मास मैसेजिंग) नियमित रूप से किए जाते हैं। अप्रैल, 2023 में कुल 7091488 मास मैसेजिंग किए गए। इसके जरिये वज्रपात और सड़क दुर्घटना से बचाव की जानकारी दी गई।